

Indo-German research council to be set up

By Akhilesh Kumar Singh/TNN

Kanpur: Directors of the seven Indian Institutes of Technology (IITs) and vice-presidents of nine technological universities of Germany have decided to set up an Indo-German Joint Research Council to organise seminars and workshops on various emerging areas.

At a high-profile meeting at the IIT-Kanpur here on Monday, the experts decided that in addition to organising seminars and workshops, the proposed council would also consider joint research projects for funding. The German and Indian professors are expected to formulate project proposals based on mutual interest of the collaborating groups, IIT-K director Professor Sanjay Govind Dhande told *The Times of India*. Dhande presided over the meeting.

Other IIT directors present in the meeting were Surendra Prasad (IIT-Delhi), Ashok Mishra (IIT-Bombay), SK Dubey (IIT-Kharagpur) and Prem Vrat (IIT-Roorkee). IIT-Guwahati director Gautam Barua and his IIT-Madras counterpart M Anant were represented by their senior faculty members Sahasra Budhe and Shant Kumar respectively. Prof Norbert Henze of University of Karlsruhe was the head of the German delegation.

“Under the aegis of the proposed council, some fixed number of projects would be funded after a careful scrutiny. The council would need a separate budget for supporting the seminars/workshops and other such projects,” said Dhande. He said

that the estimated annual expenses of the council would be around Rs 3 crore. The experts also felt that the German Academic Exchange Service (DAAD), Department of Science and Technology (DST, India) and the IIT system (through a special MHRD grant) could be the partners for financial administration of the Council.

Dhande said that students and faculty exchange programmes would be governed by the proposed council according to the need of the projects. Such exchanges will be focused, need-based and most importantly, the purpose and period of stay of the scientists in the foreign countries would be extremely well

defined, he added.

However, the proposed body would prioritise some areas for funding. The priorities are expected to change in every three years. Currently, railway and transportation engineering, experimental methods in engineering, generation and distribution of energy, computational mechanics, biological science and bio-engineering, information and communication technology and environmental engineering would be the priority areas.

The meeting also discussed the frontiers of Indo-German engineering programmes. “The frontiers of engineering is the right forum to brainstorm the need of high-quality inter-disciplinary efforts in the projects involving technology development,” said IIT-K director.



जर्मन तकनीकी संस्थानों के साथ हाथ मिलाया देश की सभी आई आई टी ने

कानपुर 3 अप्रैल। रेडियो आवृत्ति चिन्हॉकन सहित अनेक तकनीकी क्षेत्रों में आदान-प्रदान को लेकर आज जर्मनी की ९ तकनीकी संस्थानों के उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमण्डल व देश के सातों आई आई टी के निदेशकों के बीच वार्ता के दौरान सहमति बन गयी। इस अवसर पर दोनों देशों के बीच हुई बैठक में आई आई टी की कानपुर की ओर से निदेशक डा. एस जी धाड़े व जर्मन प्रतिनिधिमण्डल की ओर से करिश्रुह विश्विद्यालय के प्रॉ नार्बर्ट हेन्ज ने नेतृत्व किया।

इस सहमति में नयी तकनीकों के आदान प्रदान से दोनों ही देशों को होने वाले लाभ पर भी चर्चा हुई। शोध

के क्षेत्र में भी सहमति बन गयी है। इस सहमति से दोनों देशों के शोध छात्रों को लाभ मिलेगा। इस दौरान यह भी विचार किया गया कि वीडियो ट्रांस्मिशन के द्वारा दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से दोनों देशों के शोध छात्र प्रतिवर्ष अग्रणी स्तर के तीन कोर्सेस कर सकते हैं। यह कोर्सेज अग्रेजी में पढ़ाये जायेंगे।

नये क्षेत्रों में सेमिनार व कार्यशालाओं का आयोजन करने के लिये भारत जर्मन संयुक्त शोध कांउन्सिल का गठन किया जायगा। यह कांउन्सिल संयुक्त शोध परियोजनाओं के लिये धन की भी व्यवस्था करेगी।

जर्मनी के विश्वविद्यालयों ने आईआईटी से मिलाए हाथ

■ ई-लर्निंग के लिए खुलेंगे एक-दूसरे के दरवाजे ■ इंडो-जर्मन ज्वाइंट रिसर्च काउंसिल का प्रस्ताव

संवाददाता, कानपुर

जर्मनी के शीर्ष नौ प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालयों ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों से हाथ मिलाए हैं। इन संस्थानों ने ई-लर्निंग के लिए एक दूसरे के दरवाजे खोले हैं, वहीं इंडो-जर्मन ज्वाइंट रिसर्च काउंसिल के गठन का प्रस्ताव किया गया है।

सोमवार को जर्मनी के शीर्ष नौ तकनीकी विश्वविद्यालयों के समूह 'टीयू-9' का प्रतिनिधिमंडल यूनिवर्सिटी ऑफ कारिसुहे के कुलपति प्रो. नार्बर्ट हेंज की अगुवाई में आया था। इस प्रतिनिधिमंडल ने यहाँ जुटे सभी सात भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों के निदेशकों के साथ दोनों देशों के बीच तकनीकी संवर्द्धन पर विचार विमर्श किया। तय हुआ कि ई-लर्निंग के लिए दोनों देश और सभी सोलह संस्थान एक दूसरे के लिए शोध, शिक्षण व प्रशिक्षण के दरवाजे खोलेंगे। आईआईटी के छात्र व शिक्षक जर्मनी जाएंगे और जर्मन विश्वविद्यालयों के छात्र व शिक्षक नियमित रूप से यहाँ आएंगे। इसके अलावा ई-लर्निंग व दूरवर्ती शिक्षा को भी आपस में बढ़ावा दिया जाएगा। दूरवर्ती शिक्षा क्षेत्र में तीन नए शैक्षिक पाठ्यक्रमों की शुरुआत पर सहमति बनी, जिनमें दोनों देशों के छात्र-छात्राएं मिलजुल कर पढ़ाई करेंगे।

दोनों प्रतिनिधिमंडलों ने भारत व जर्मनी के बीच आपसी शोध को बढ़ावा देने के लिए इंडो-जर्मन ज्वाइंट रिसर्च काउंसिल का प्रस्ताव भी सिद्धांत रूप से



■ आईआईटी कार्यशाला में वैज्ञानिकगण।

जागरण

स्वीकार कर लिया। अब इसे शासन स्तर पर मंजूरी दिलाकर अमल में लाया जाएगा। इसके माध्यम से शोध गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाएगा। मूल रूप से रेडियो फ्रिक्वेंसी चिहनांकन, वीएलएसआई व

सातों निदेशकों में विचार मंथन

कानपुर। सोमवार को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में नगर के अलावा रुड़की, खड़गपुर, दिल्ली, गोहाटी, चेन्नई व मुंबई आईआईटी के निदेशक जुटे। इन लोगों ने आपस में व्यापक विचार मंथन किया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के साथ भविष्य में उदाए जाने वाले मुद्दों से लेकर सामान्य स्थितियों में आने वाली चुनौतियों पर भी विचार विमर्श हुआ।

मॉडलिंग एंड सिम्युलेशन क्षेत्र में शोध को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया। तय हुआ कि दोनों देशों के वैज्ञानिक एक प्लेटफार्म पर जुड़कर आपस में शोध करेंगे और शोध परिणामों का आदान प्रदान कर तकनीकी उन्नयन

को दिशा देंगे। आपसी अध्ययन-अध्यापन के लिए वीडियो ट्रांसमिशन तकनीक का प्रयोग भी किया जाएगा। इसके अलावा दोनों देशों के बीच नए तकनीकी क्षेत्रों को आधार बनाकर नियमित कार्यशालाओं के आयोजन पर सहमति बनी। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों के प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई आईआईटी कानपुर के निदेशक प्रो. संजय गोविंद धाण्डे ने की। उन्होंने जर्मनी के विश्वविद्यालयों को भरपूर सहयोग के प्रति आश्वस्त किया।